Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

July-August-September-2018

Vol. 5 Issue 3

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mr. Bharati Sonawane - Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)
Dr. Munaf Shaikh, Jalgaon (Urdu)

Details Visit To - www.researchjourney.net SWATIDHAN PUBLICATION

Scanned with CamScanner

हिंदी विभाग

28	बौद्ध एवं शैवो की दार्शनिक समन्वयाभिव्यक्ती : नाथ साहित्य	डॉ. शशिकांत सोनवणे	152
29	आचार्य नरेन्द्र का किसान एवं मजदुर आंदोलनो में योगदान	डॉ.राजीव रतन	163
30	नाटककार जगदीशचंद्र माथुर ('कोणार्क नाटक के विशेष संदर्भ में)	डॉ. सुचिता गायकवाड	169
31	हिंदी कविता और वर्तमान संदर्भ में रस सिद्धांत	डॉ.ज्ञानेश्वर महाजन	176
32	आदिवासी क्षेत्रो में महिलाओं की स्थिती	प्रा.आर.एन.वाकळे	180
33	विद्यानिवास मिश्र के निबंधो में पर्यावरण	डॉ. अनंत भिंगारे	183
34	डॉ. सुशीला टाकभौरे के काव्य में अभिव्यक्त भारतीय समाज	डॉ. उद्धव भंडारे	186
35	'मोहें रंग दो लाल' में विषयों की विविधता	प्रा. संजीता वेलीप	194
36	केदारनाथ अग्रवाल की कहानी 'समाज की भूल में नारी जीवन	प्रा. संतोष नागरे	201
37	संकिर्ण मानसिकता की प्रस्तुति : ' है गंगा तुम बहती हो क्यूं...?'	डॉ. धीरज व्हटे	204
38	हिंदी दलित कहानियों में अभिव्यक्त भारतीय समाज	डॉ. उद्धव भंडारे	208

मराठी विभाग

39	जैन धर्मातील दीक्षा	प्रा. बाळासाहेब गणपाटील	214
40	हिंदू धर्मातील स्त्रियांचे सामाजिक स्थान व मानवी हक्क	डॉ. वंदना चौधरी	218
41	लोकसाहित्यातील लोकजीवन व लोकसमजुती	डॉ. बाबासाहेब शेंडगे	220
42	लोकनाट्य जांभूळ आख्यान	आश्विनी माने	224
43	कोकणातील लोकनाट्य 'नमन-खेळे'-एक चिकित्सा	दुर्गेश मल्लिक	230
44	साक्री तालुक्यातील अहिराणी ओवीगीतातील स्त्री-जीवन	डॉ.प्रकाश साळुंके	237
45	'कणसरी दूलं' मधील आदिवासींचे समाज वास्तव	डॉ. संबली मस्करेन्हस	243
46	चक्रधर स्वामींची साधकासाठी आचारसंहिता	डॉ. प्रवीण कारंजकर	247
47	संत चोखामेळा आणि त्यांचा परिवार	डॉ.काशिनाथ बऱ्हाटे	250
48	संत कवयित्रींच्या काव्यातील मुक्त आविष्कार	डॉ. शीला गाढे	257
49	विद्याधर गोखले यांची संगीत नाटके	प्रा. विद्या बावणे	260
50	१९६० पूर्वीच्या मराठी नाटकातील स्त्री	डॉ. अशोक लिंबेकर	263
51	महापुरुषांच्या कृतीशील जलनीतीची वर्तमानकालीन उपयुक्तता	डॉ. दादाराव गुंडरे	271
52	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि अस्पृश्यता निर्मुलन	डॉ.उमाकांत वानखेडे	275
53	राजर्षी शाहू महाराज यांचे अस्पृश्यांच्या उद्धाराचे कार्य	डॉ. लता कांदे	279
54	महात्मा गांधींच्या विचारांचा मराठी साहित्यावरील प्रभाव	डॉ. अनिल सर्जे	285
55	दलित कविता आणि सद्यस्थिती : एक आढावा	प्रा.सिद्धार्थ इंगोले	289
56	दलित कविता आणि सद्यस्थिती	डॉ. बाळासाहेब लिहीणार	292
57	अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील गावगाडा	डॉ. सहदेव चव्हाण	295
58	ग्रामीण कादंबरीतील स्त्री संघर्ष	डॉ. संतोष देशमुख	299
59	मराठी साहित्यातील स्त्रियांचे कथालेखन	डॉ.सुवर्णा गाडगे	302
60	राष्ट्रसंतांच्या लेखनातील राष्ट्रीय विचार	डॉ. प्रवीण कारंजकर	307
61	'पोटमारा' कादंबरीतून उच्च शिक्षित तरुणांच्या समस्या	डॉ.किशोर पाठक	311

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN :
Impact Factor - (SJIF)-6.261(2017), (CIF) -3.452(2015), (GIF) -0.676 (2013) | 2348-7143
UGC Approved Journal | July-August-Sept. 2018 | Vol. 5, Issue 3

केदारनाथ अग्रवाल की कहानी 'समाज की भूल' में नारी जीवन

संतोष नागरे
सहा.प्रा.- हिन्दी विभाग
र. भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड
ई-मेल- nagresantosh1@gmail.com

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील साहित्यधारा के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। अपने अपनी रचनाओं के माध्यम समाज के शोषित, पीड़ित वर्ग की वेदना को वाणी दी है। स्त्री सदियों से पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था द्वारा पीड़ित है। केदारनाथ अग्रवाल ने अपने कहानी - संग्रह 'उन्मादिनी' की 'नर्तकी', 'आदर्श गृह धर्म तथा 'समाज की भूल' कहानी के माध्यम से नारी की मूक वेदना को अभिव्यक्त करते हुए उनकी स्वतंत्रता पर बल दिया है। शंभु गुप्त इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "स्त्री की अस्मिता केदारनाथ अग्रवाल की इन कहानियों का महत्वपूर्ण कन्सर्न है।"[1] 'समाज की भूल' स्त्री स्वतंत्रता को लेकर लिखी गयी एक सशक्त कहानी है। पुरुष प्रधान समाज-व्यवस्था ने सदियों से स्त्री स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे मानवीय अधिकारों से उपेक्षित रखा। समाज की इस भूल को सुधारने की वकालत केदारनाथ अग्रवाल ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से की है। प्रस्तुत कहानी में केदार स्त्री-पुरुष समानता के समर्थक है। इसके साथ ही यह कहानी केदार की सामाजिक प्रतिबध्दता को बयान करती है।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने वकील साहब तथा वल्लभ के परिवार के माध्यम से नारी जीवन की दासता को बयान किया है। वल्लभ ने अपनी जान पर खेलकर वकील साहब को डूबने से बचा लिया। इस घटना के पश्चात वल्लभ न नौकरी के लायक रहा न रोजगार के। उसके अपाहिजपन से परिवार आर्थिक विपान्नावस्था में आ गया। वल्लभ की पत्नी वकील साहब की पत्नी मनीशा से पैसा उधार लेकर घर चला रही थी। मनीशा वल्लभ के परिवार की मदद करना अपना फर्ज समझती है, क्योंकि उन्हीं के कारण उसका सिंदूर जीवित है। वकील साहब को अपनी पत्नी मनीशा की परोपकारिता, उदारता निरी मूर्खता लगती है। अतः वे उसपर व्यंग्य करते रहते हैं। और मनीशा गूँगी गुड़िया बनकर हर ताने को चुपचाप सहती रहती है। सदियों की इस चुप्पी को तोड़ती हुई मनीशा पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था की पोल खोलती हुई कहती है,- "नारियों को तो ईश्वर ने ही पराधीन और दूसरों के हाथ की कठपुतली बनाया है। भला मैं बेचारी क्या कह सकती हूँ। मुँह होते हुए भी तो वह सी दिया गया है। मायके ही में मुझे अधिक बोलने से रोका जाता था क्योंकि मुझे ससुराल जाना था। मेरी माता मुझे प्रतिदिन ही समझाती थी। हमें तो निर्जिव होकर रहना पड़ता है। मुझे बताया जाता था कि समाज में हमारे गुणों एवं बुध्दि पर ध्यान नहीं दिया जाता है वरन हमसे मुँह ढककर रहने एवं हमारी इच्छाओं को कुचलने में ही प्रशंसा होती है।"[2] नारी के गूँगेपन को पुरुष-प्रधान समाज व्यवस्था एक अलंकार के रुप में देखती है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में नारी का गूँगापन उसका सौन्दर्य माना जाता है। पति के घर में रहना, सहना और कुछ न कहना यही नारी जीवन की नियति है। साथ ही पिता, पति और पुत्र की संपति पर नारी का अपना कोई अधिकार नहीं रखा गया है। वकील साहब ने अदालत में छल-कपट, शब्दों की हेरा-फेरी से, सच को झूठ और झूठ को सच साबित कर आकूत धन कमाया। वकील साहब के लिए पैसा ही धर्म होने से वे अपने जीवन में मानवता, परोपकारिता, संवेदनशीलता, कृतज्ञता आदि मूल्यों को कोई अहमियत नहीं देते। इसीकारण मनीशा द्वारा वल्लभ के परिवार की आर्थिक मदद के लिए लाख मिन्नतें किये जाने के बावजूद भी वकील साहब का पाषाण-हृदय टस-से-मस नहीं हुआ। मुवक्किलों का खून चूसते-चूसते वकील साहब का हृदय पाषाण बन गया। पुरुष हृदय की संकुचितता, स्वार्थता की तुलना में नारी हृदय की विशालता, मानवता, परोपकारिता की ओर संकेत करती हुई मनीशा कहती है,- "मुझे नहीं ज्ञात था कि पुरुषों में ऐसे भाव वर्तमान है। कृतज्ञता का इतना क्रूर रुप तो नारियों ने कभी भी न बनाया होगा।.... इससे अच्छी तो नारी जाति है। वह अपने अधिकारों का सर्वनाश तो न करेगी। रुपया पैसा ही सब

Scanned with CamScanner

कुछ नहीं है। हृदय की बात भी तो माननी चाहिए। वह अपने उपकारी के हेतु जीवन तक उत्सर्ग कर सकती है। क्या यह कम है।"[5]

एक दिन वकील साहब मदद के लिए घर आयी वल्लभ की पत्नी को अपमानित करते हैं। अपमानित वल्लभ की पत्नी वल्लभ को कुछ काम धंधा करने का सुझाव देती है ताकि उसे किसी के सामने हाथ पसारना न पड़े। अपनी पत्नी के शब्दों से आहत वल्लभ उसे डाँटते हुए कहता है,- "अपना अकेला पेट होता तो कुछ-न-कुछ हो ही जाता परंतु तुम भी तो गले में जंजीर की भाँति पड़ी हो।"[6] अर्थाभाव के कारण वल्लभ को अपनी पत्नी गले की जंजीर तो वकील साहब को स्वतंत्रता तथा परोपकारिता की माँग करती अपनी पत्नी मनीशा निरी मूर्ख लगती है। कहानीकार ने यहाँ पुरुष-प्रधान समाज व्यवस्था के दोगलेपन की पोल खोली है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब सुशिक्षित हो या अपढ़ उसकी स्त्री शोषण की चक्की में निरंतर पीसती ही रहती है। नारी जीवन की इस दासता को कहानीकार ने वकील साहब तथा वल्लभ के परिवार के माध्यम बयान किया है। आर्थिक विपन्नावस्था तथा जिजीविषा के अभाव में परिस्थितियों से हारा वल्लभ जहर खाता है। अपनी पत्नी को विरासत के रुप में वैधव्य प्रदान कर वल्लभ उसे समाज में दर-दर की ठोकरें खाने के लिए अकेला छोड़ देता है।

इधर वकील साहब और उनकी पत्नी मनीशा में बढ़ते अविश्वास से गृह सुख का विनाश हुआ। वकील साहब मनीशा से घृणा करने लगे। स्त्रियाँ सदियों से ही अपने पति की यातनाओं को चुपचाप सहती आयी है, मनीशा भी इसका अपवाद न थी। "क्यों स्त्रियों को तो लड़कपन से ही कठोर यातनाएँ सहने की आदत पड़ जाती है। यही कारण है कि वकील की पत्नी यातनाएँ सह सकी।"[7] परिवार में बढ़ते कलह, नष्ट हो रहे गृह सुख से चिंतित वकील साहब बीमार हो गये। इसी बीमारी के चलते वर्षा ऋतु की मंगल की रात हृदय गति रुक जाने से वकील साहब की मृत्यु हुई। उस बरसाती रात में मनीशा को महसूस हुआ की कोई उसके कानों में कह रहा है,- "तेरे पति को पाल कर समाज ने भूल की है। ऐसे धन लोलुप और कृतघ्नी पुरुष का जन्म व्यर्थ है, जो अपने जीवन को दूसरे की भलाई के लिए उत्सर्ग नहीं कर सकता। ऐसे नीच जीवों का न रहना ही संसार के हित की बात है। जिस समाज ने मनुष्यों ने स्त्रियों के अधिकार छिन लिये हैं उस समाज को ऐसे व्यक्तियों का बलिदान कर अपनी भूल का प्रायश्चित करना पड़ेगा। तू भी उसी समाज में पली है। समाज को तेरे लिये भी अपनी भूल पर प्रायश्चित करना पड़ेगा। तू भी अब विधवा होकर रोय जीवन बिता।"[8] कार्तिक महिने में गंगा तट पर मेला लगा हुआ था। मनीशा गंगास्नान कर लौट रही थी तभी उसकी नजर वैधव्य की पीड़ा भोगती वल्लभ की पत्नी की ओर गयी। दोनों की नजरें मिलते ही सदियों की नारी दासता आँसुओं के रुप उमड़ पड़ी। "बहन देखती क्या हो। समाज की भूल का यह दुष्परिणाम है। एक हमारा ही घर क्या हजारों भारत के फलते-फुलते घर इसी भाँति उजाड़ कर दिये जाते हैं।"[9] पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के दोगलेपन की पीड़ा को नारी सदियों से आजतक भोग रही है। पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था उसे देवी के रुप में महिला मंडित तो करती है लेकिन इंसानियत की नजर से नहीं देख पाती। नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण एकांगी तथा संकुचित है। इसलिए एक नारी ही दूसरी नारी की पीड़ा को समझ सकती है, एक नारी ही दूसरी नारी के आँसू पोंछ सकती है। अतः सदियों की दासता से मुक्ति के लिए नारी को हर अन्याय एवं अत्याचार के विरुध्द संगठीत होकर आवाज उठानी होगी, तभी स्वस्थ समाज और सक्षम राष्ट्र का निर्माण होगा।

सारांश :

केदारनाथ अग्रवाल स्त्री स्वतंत्रता के पक्षधर रचनाकार हैं। केदारनाथ अग्रवाल ने 'समाज की भूल' कहानी के माध्यम से पुरुष - प्रधान समाजव्यवस्था में पीसती नारी की मूक वेदना को अभिव्यक्त किया है। सदियों से स्त्री स्वतंत्रता एवं अधिकारों का अपहरण कर पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था जो भूल करती आयी है उसे सुधारने के लिए कहानीकार ने स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता, स्वावलंबन तथा संगठन पर बल देते हुए स्त्री सक्षमीकरण के संदर्भ में उनकी वकालत की है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक शताब्दियों से स्त्री स्वतंत्रता का अपहरण करनेवाली समाज की भूल को दर्शाता है। अतः यह अत्यंत सार्थक है। प्रस्तुत कहानी की भाषाशैली विषयानुरुप सहज, सरल एवं हृदय को छू लेनेवाली है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रंथ :-

१. सम्पा. संतोष भदौरिया, केदारनाथ अग्रवाल : गद्य की पगडंडियाँ, पृ.१३७
२. सम्पा. नरेंद्र पुण्डरीक, उन्मादिनी, पृ.५०-५१
३. वही, पृ.५३
४. वही, पृ.५५
५. वही, पृ.५६
६. वही, पृ.५७
७. वही, पृ.५८

Scanned with CamScanner